हिमाचल अभी अभी

ABHI ABHI

/himachal.abhiabhi @himachal_abhi

नई सोच नई खोज

साप्ताहिक

RNI No. HPHIN/2015/68432 वर्ष 5 अंक 45 धर्मशाला। शनिवार, 25 जुलाई -31 जुलाई, 2020 www.himachalabhiabhi.com तदनुसार 10 श्रावण, विक्रमी संवत् 2077 कुल पृष्ठ 12 मूल्य ₹5 | Postal Regn.No. DGPUR/26/15-17

पुत्रदा एकादशी...

-पढ़ें पेज 2 पर

नाग पंचमी

श्रावण मास के शुक्लपक्ष में 25 जुलाई को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र और शिव योग में नागपंचमी का पर्व मनाया जाएगा, लेकिन कोरोना महामारी के कारण इस बार नागपंचमी पर भक्त मंदिरों पर जाकर नागदेवता को दूध अर्पित नहीं कर पाएंगे। पंचमी तिथि 24 जुलाई की दोपहर 2 बजकर 33 मिनट से प्रारंभ होकर 25 जुलाई को दोपहर 12 बजकर 1 मिनट तक रहेगी।

प्रत्येक मास में आने वाली पंचमी के देव नाग देवता ही होते हैं, लेकिन श्रावण मास की पंचमी में नाग देवता की पूजा विशेष रूप से की जाती है। नागपंचमी पर नागदेवता की पूजा के धार्मिक और सामाजिक व ज्योतिषीय कारण होते हैं। ज्योतिषाशास्त्र में कुंडली में योगों के साथ दोषों को देखा जाता है। कुंडली के दोषों में कालसर्प दोष को मुख्य माना जाता है। इस दोष से मुक्ति के लिए नागपंचमी पर नागदेवता की पूजा की जाती है। जिस व्यक्ति की कुंडली में राहु अच्छी स्थिति में नहीं है उसके निवारण के लिए नागपंचमी के दिन नागदेव की बामी (बांबी) की पूजा की जाती है। इस दौरान नाग देवता को सुंगध, दूध, धूप, चंदन अर्पित कर पूजा की जाती है।

नाग देवता को भगवान शिव और विष्णु का सर्वाधिक प्रिय बताया गया है। नाग देवता देवों के देव महादेव भगवान शिव के गले की शोभा बढ़ाते हैं तो वहीं वह जगत के पालनहार भगवान विष्णु की सैय्या भी हैं। भगवान विष्णु नागदेवता की कुंडली से बनी सैय्या पर ही विश्राम करते हैं। इसके साथ ही सबसे क्रूर ग्रहों में माने जाने वाले राहु को भी नाग का रूप माना जाता है। इसके कारण नागदेवता का धार्मिक महत्व काफी अधिक है।